रंगभारती

१९७८ का नाट्य-साहित्य विशेषांक

अंक ८-९ फरवरी-मार्च, १९८०

१९७८ के रेडियो एकांकी

नागर जी के चार रेडियो नाटक:

चक्करदार सीढ़ियां और अँधेरा*

प्रसिद्ध कथाशिल्पी अमृतलाल नागर उपन्यासकार और कथाकार ही नहीं, सशक्त नाटककार भी हैं। उनके रेडियो नाटकों को 'चक्करदार सीढ़ियाँ और अँधेरा' संग्रह में पढ़कर सहज ही यह विश्वास होता है कि कथाकार के बजाय यदि वे नाटककार ही होते, तो भी उतने ही सफल होते। कथा-विन्यास के अनूठे शिल्प, संवाद-शैली जिसमें आंचलिकता और नैत्यिक बोलचाल की भाषा का पुट मिश्री की तरह घुला है, व्यंग्य, मुहावरेदार और पात्रानुसार भाषा—ये सभी गुण नाटक में जान डाल देते हैं। और इस संग्रह के रेडियो नाटकों की कथा, संवाद और भाषा इन सभी गुणों से सम्पन्न हैं। यदि ये रेडियो के शिल्प से मण्डित न होते, तो संग्रह के चारों नाटकों को बहुदृश्यीय लघु नाटकों की संज्ञा दी जा सकती है।

संग्रह में चार रेडियो नाटक हैं। चक्करदार सीढ़ियाँ और अँधेरा, फिर न कहना दोस्त, सेठ बाँकेमल तथा महिपाल। प्रत्येक नाटक में क्रमशः नौ छह, (जिनका कहीं उल्लेख नहीं है, एक (कथावस्तु पश्चात्दर्शन-फ्लैश बैक टेकनीक से चलती है) तथा दस दृश्य हैं। ये सभी रेडियो पर प्रसारणार्थ लिखे गये थे, अतः आकाश-वाणी से प्रसारित तथा दूरदर्शन से प्रदर्शित भी हुए और प्रसारण-शिल्प के साथ ही प्रकाशित भी हुए हैं। यह अच्छा ही हुआ कि लेखक ने स्वयं या प्रकाशक के दबाव को स्वीकार कर ध्वनि-संकेतों को बदल कर नाटक में रंग-संकेत नहीं रखे। नागर जी का रेडियो से निकट का सम्बन्ध रहा है और उन्हें नाटक के रेडियो-शिल्प पर पूरा अधिकार प्राप्त है, अतः उनके ये रेडियो नाटक इस विधा की अपनी सक्षमता और प्रभविष्णुता का आभास कराते हैं। इनमें से तृतीय उनके पूर्ववर्ती रेडियो एकांकी संकलन 'बात की बात' में प्रकाशित हो चुका है और चतुर्थ उनके उपन्यास 'बूंद और समुद्र' के ही कथा-प्रसंग का नाट्य-रूपांतर है।

'चक्करदार सीढ़ियाँ और अँधेरा' में पागलखाने से स्वस्थ हुई युवती उमा

* चक्करदार सीढ़ियाँ और अँधेरा—अमृतलाल नागर; प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली; क्राउन, प्रथम संस्करण, १९७८; पृ० १४४; मूल्य : १२-५० रु०।

के साथ महाराजकुमार के विवाह, सन्तान-लाभ और दौरा पड़ते ही उमा द्वारा नवजात शिशु की हत्या करने के प्रयास को देख स्वयं महाराजकुमार द्वारा उमा का गला दबाने की कोशिश की एक मनोवैज्ञानिक किन्तु त्रासद कथा सन्निहित है। कथा के मोड़ों में स्वाभाविकता और रोचकता तो है, किन्तु लेखक कोई रचनात्मक दिशाबोध नहीं दे सका।

दूसरे नाटक 'फिर न कहना दोस्त' में विवाहिता चाँदकुमारी के पति कवि बिरहेश के पीठ पीछे कवि तरु त्यक्तस्वर्ग और प्रयोगेश के प्रेम की फुलझड़ियाँ जलती हैं, और चाँद के दोनों प्रेमी एक-दूसरे को नीचा दिखाने की जी-तोड़ कोशिश में लग कर सदा के लिये फर्स्ट एप्रिल-फूल बन जाते हैं। नाटक में आज के कवियों की तुकबड़बाजी का उपहास किया गया है।

सेठ बाँकेमल में मौज से जियो और जीने दो के सिद्धांत पर आधारित दो जिगरी मित्रों सेठ बाँकेमल और चौबे की पश्चात्दर्शनी कथा कही गई है, जिसमें जौहरी बन कर बम्बई के सबसे बड़े जौहरी और दिल्ली में आए हुए राजा को ठगने और अन्त में चौबे जी की दंगल में जीत और पंडित देवीदयाल की लड़की के ब्याह को सकुशल कराने में उनके योगदान की चर्चा अनौपचारिक रूप से आगरे की आंचलिक बोली में की गई है। इसमें तरकेटी, खुसकैट, फोक्स आदि आंचलिक शब्दों ने संवादों को यथार्थ, व्यंजकता और अर्थवत्ता का सस्पर्श प्रदान किया है।

महिपाल, महिपाल जैसे आदर्शवादी लेखक की आर्थिक संघर्ष, घुटन, टूटन, फिसलन और पतन के बाद डूबकर आत्म-हत्या करने की विवशता की कहानी है—असफल पति, असफल प्रेमी और असफल पिता और दुनियादार की बेबसी और पश्चात्ताप ही उसके जीने का सारा सहारा छीन लेते हैं। इस नाटक को भी अवधी के संवादों के कारण आंचलिक स्पर्श प्राप्त हुआ है। कल्याणी (महिपाल की पत्नी) के आंचलिक संवाद बड़े जानदार हैं, जिनमें नारी की दृढ़ता, जिद् और नारी-सुलभ सहजता के दर्शन होते हैं। इस नाटक में 'ससुर', 'ससरे', 'ससुरा', साले' आदि अपशब्दों का कई स्थानों पर धड़ल्ले से, किन्तु आम आदमी की बोलचाल को दृष्टि में रखकर प्रयोग हुआ है। सामान्यतः स्त्री-पुरुष सम्बन्धों पर खुलकर बहस हुई है।

नाटकों पर नागर जी के आंचलिक नागरत्व की, हास्य, व्यंग्य और चुल-बुलेपन से भरी उनकी अपनी शैली की छाप है, जो उन्हें दूसरे नाटककारों से अलग कर देती है।

□ रंगाचार्य

नारी की पीड़ा के चित्र अनेक :

चन्द टुकड़े औरत*

रेडियो-एकांकी की उठान, सज-धज और पहिचान ही अलग होती है। उसके अंग-प्रत्यंग को काट-छांट या तोड़-मरोड़कर बनाये गये रंग-एकांकी का दोगलापन उसे खच्चर की जाति की रचना बना देता है, जो न रेडियो-एकांकी ही रह पाता हे और न रंग-एकांकी ही बन पाता है—वैसे ही, जैसे टुकड़े-टुकड़े जोड़कर बनाई गई पूर्ण औरत भी न 'औरत' ही रह पाती है, न 'पूर्ण' बन पाती है। यह बात दूसरी है कि 'चंद टुकड़े औरत' अपने मूल रूप में रेडियो एकांकी ही है—उसमे कोई दागलापन नहीं आ पाया है। इस संग्रह के सभी सातों रेडियो-एकांकी अपनी अस्मिता की पहिचान देते हैं और इस संग्रह के एकमात्र रंग-एकांकी 'खाली सीप' की अस्मिता भी खण्डित नहीं हुई है। लेखक हैं—उदीयमान नाटककार, गिरीश बख्शी।

शिल्प की दृष्टि से रेडियो-एकांकी का प्रमुख माध्यम है—ध्वनि और शब्द ; शब्द अर्थात् संवाद। एक ध्वनि-एकांकी या सम्मिलित शुरू होती है कि उसकी थरथराहट के डूबते ही नयी ध्वनि, नये स्वर फिर कर्ण-कुहर से टकराते हैं और प्रायः ये ध्वनियां पात्र के हृदय की पीड़ा या मनोद्वेग को भी व्यंजित करती हैं, आसपास के उल्लास, दुःख या एकाकीपन के वातावरण को भी। गिरीश बख्शी ध्वनि के सार्थक उपयोग में कुशल हैं। दृश्य-परिवर्तन के लिये भी संगीत-संतरण का उपयोग किया गया है।

संवाद छोटे, बड़े, स्वगत, टूटे या अधूरे सभी प्रकार के हैं। 'शीशे के आरपार' में एक पैर-कटे सैनिक सुबोध के स्वगत ही चलते रहते हैं, केवल नर्स या मरीज रामसरन से वार्ता के अवसर और फ्लैशबैक के अवसर ही उसमें व्यवधान बनते हैं। फ्लैशबैक की इस पद्धति का 'परछाइयों का जंगल', 'चंद टुकड़े औरत' तथा 'मंगलो' में भी अच्छा उपयोग किया गया है। सम्भवतः ध्वनि-माध्यम में फ्लैशबैक द्वारा पात्र के अवचेतन में घटित घटनाओं का सजीव चित्र प्रस्तुत किया जा सकता है।

---

* चंद टुकड़े औरत—गिरीश बख्शी ; प्रकाशक : राजेश प्रकाशन, दिल्ली—५१ ; प्रथम संस्करण, १९७८, डिमाई ; पृष्ठ १०५ ; मूल्य : १४-००रु०।

इनमें 'लकीर और घेरे' का कथ्य परिवार-नियोजन से सम्बन्धित है। शेष एकांकी पुरुष या स्त्री की टूटन और संत्रास, घुटन और बेबसी के करुण चित्र प्रस्तुत करते हैं।

'शीशे के आर-पार' में सैनिक सुबोध की दुर्घटना के फलस्वरूप टांग कट जाने पर उसकी प्रेमिका मालती उससे किनारा कर लेती है और उसका जीवन रिसता रह जाता है। इसके विपरीत 'अंजली भर धूप' की नायिका शुभा स्वयं अपने को खोज पाने में असमर्थ होकर घर-बाहर के रिश्तों से सदा के लिये अपने को काट लेती है, तो, 'गुड्डी की मम्मी' में अपने पति की इस सनक से पीड़ित होकर कि मातृत्व से स्त्रीत्व की शोभा-सुन्दरता नष्ट हो जाती है और पुत्र के उत्कर्ष के लिये उसे दूर-दराज के अच्छे स्कूल में भर्ती करना चाहिये, सुन्दरी प्रीति का प्लास्टिक की डॉल' को ही अपना बेबी मानकर शेष जीवन के दंश को सहन करते रहना पड़ता है। 'परछाइयों का जंगल' मे एक मनोरोगिणी की व्यथा-कथा अंकित है, जबकि, 'मंगलो' अनेक कापुरुषों की वासना शांत करने के बाद भी एक कुचक्री जगदीश सेठ के छुरे की शिकार बनती है—इसलिये कि वह अब और उसके कुचक्र की संगिनी नहीं बनना चाहती।

'चंद टुकड़े औरत' में मधु नामक खण्डित व्यक्तित्व की नारी का मनो-विश्लेषण अदालत के परिवेश के माध्यम से किया गया है—उसका पति, सास, ससुर, ननद और देवर पांचों उसे नहीं, उसके माध्यम से दूसरों को प्यार करते हैं और इसी आरोप पर अदालत से औरत को अपनी ही पूर्णता में देखे जाने की मांग की जाती है।

'खाली सीप' की नायिका दीपा खाली और उदास जिन्दगी की मालकिन है। छोटे भाई शेखर के समर्थ होने तक वह अपने बारे में कुछ भी सोचना-करना नहीं चाहती। द्वार पर आये प्रेमी को भी लौटा देती है, किन्तु तभी शेखर भी अपने नाटक-क्लब की सेक्रेटरी रंजना को लेकर कानपुर चल देता है अच्छी नौकरी के बहाने। दीपा की जिन्दगी खाली सीप की भांति निष्फल होकर रह जाती है।

एकांकीकार गिरीश नारी की पीड़ा के चितेरे हैं। इनके चित्र गहरे, मटमैले रंगों से बने हैं, जो समय के साथ धूमिल होते चले जाते हैं। आशा-उमंग की किरण उनमें कहीं से नहीं फूटती। यह जीवन का एक पक्ष है। दूसरे पक्ष में चटक और तेज, ऊष्ण और आकर्षक रंग भी हैं। कदाचित् गिरीश आगे चलकर इन रंगों से भी अपने कथ्य के ताने-बाने सँजोकर आशा-उल्लास का सन्देश दे सकेंगे, ऐसा विश्वास है।

□ डॉ० अज्ञात